पारिवारिक जीवन, पावन जीवन

वाणी डालग्रैन

सन् १९७६ में जब बाबा मुक्तानन्द भारत वापस आए थे, उसके कुछ ही समय पहले मुझे और मेरे पति को न्यूयॉर्क में उनसे शक्तिपात प्राप्त हुआ था। हम बाबा जी के प्रेम और कृपा के अनुभवों से इतने द्रवीभूत थे कि उनके साथ और भी समय बिताना चाहते थे। अन्ततः १९७८ की बसन्त ऋतु में हमने भारत जाने की योजना बनाई ताकि हम गुरुदेव सिद्धपीठ में बाबा जी के सान्निध्य में रह सकें।

बोस्टन के पास स्थित हमारे घर से भारत की यात्रा तीस घण्टे की थी तो हमें लगा कि यह यात्रा हमारे दो छोटे बच्चों के लिए बहुत मुश्किल होगी। इसलिए हमने यह तय किया कि पहले दो हफ़्ते के लिए मैं जाऊँगी और इस दौरान मेरे पति बच्चों की देखभाल करेंगे, फिर मैं घर वापस आ जाऊँगी और मेरे पति भारत जाएँगे।

मैं मई माह की पूर्णिमा, यानी बाबा जी के जन्मदिवस से ठीक पहले गुरुदेव सिद्धपीठ पहुँच गई और बड़ी प्रसन्नता के साथ गुरुचौक में बाबा जी के दर्शन के लिए गई। मैंने बाबा जी को बताया कि मैं और मेरे पति मिलकर बच्चों की ज़िम्मेदारी सँभाल रहे हैं और जब मैं घर वापस जाऊँगी तब मेरे पति यहाँ आएँगे।

बाबा जी ने फ़ौरन कहा, "तुम्हें अपने बच्चों को लेकर आना चाहिए था।" जब मैंने यह सुना तो मैं एक क्षण के लिए सोच में पड़ गई और जो उत्तर मुझे सूझा, वह था, "अगली बार, बाबा जी।" बाबा जी ने कहा, "अगली बार वे बहुत बड़े हो चुके होंगे," और ऐसा कहकर उन्होंने गुरुचौक में बैठे सभी प्रसन्न व स्वस्थ बच्चों की ओर इशारा किया।

गुरुचौक में बैठकर मैं, बाबा जी की बात पर मनन करने लगी। मुझे स्पष्ट रूप से यह समझ में आ गया कि बाबा जी चाहते हैं कि पूरा परिवार एक-साथ आश्रम में हो। मैं सोचने लगी कि मैं किस तरह अपने बच्चों को भारत बुलवा सकती हूँ। उस समय गणेशपुरी से अमरीका फ़ोन करने का कोई साधन उपलब्ध नहीं था, परन्तु आश्रम की सड़क के पार एक डाकघर था जहाँ से अमरीका, तार भेजा जा सकता था। उस डाकघर के दफ़्तर में, तार भेजने की एक पुरानी-सी मशीन थी जिसके लीवर का उपयोग कर ऑपरेटर 'मॉर्स कोड' [यानी वह कोड जिसमें शब्दों और वाक्यों के लिए छोटी-बड़ी रेखाओं द्वारा सन्देश लिखा जाता है] में सन्देश भेजता था। तार को विदेश पहुँचने में कई

दिन लग जाते थे परन्तु, सब कुछ ठीक हो जाएगा, ऐसी आशा रखते हुए मैंने अपने पति को यह तार भेज दिया कि वे बच्चों को लेकर आश्रम आ जाएँ।

मुझे अपनी तार का कोई उत्तर नहीं मिला, लेकिन मैंने संकल्प लिया कि जो भी हो, मैं गुरुदेव सिद्धपीठ में अपना समय अच्छे से अच्छे तरीक़े से बिताऊँगी; ऐसा सोचकर मैं आश्रम के दैनिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेने लगी। मैं हर सुबह तीन बजे उठ जाती, ध्यान करती, सभी कार्यक्रमों व नामसंकीर्तनों में भाग लेती और घण्टों तक सेवा करती। यह तल्लीनता आनन्द से भर देने वाली थी। फिर भी, कभी-कभी मैं बेचैन हो उठती और महसूस करती कि पूरा परिवार इस अनुभव में शामिल नहीं है जैसा कि बाबा जी ने कहा था।

फिर, मेरे वापस जाने की तारीख़ से कुछ दिनों पहले, एक दिन सुबह श्रीगुरुगीता-पाठ समाप्त होने ही वाला था कि तभी मेरे पति और बच्चे गुरुचौक में आ पहुँचे! मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ! मैं उन्हें देखकर बहुत आश्चर्य और आनन्द से भर उठी। असल में, उन्हें मेरा तार मिल गया था और उन्होंने मुझे तार द्वारा उत्तर भी भेजा था, परन्तु उनका तार यहाँ तक पहुँचता, उसके पहले ही वे आश्रम पहुँच चुके थे! मैं आश्रम में अपने आवास की अवधि बढ़ा पाई और हम सभी इस बात से बहुत ख़ुश थे कि हम आश्रम में एक-साथ कई हफ़्तों तक रह पाएँगे।

मेरे परिवार के आश्रम आने के बाद, मेरी दिनचर्या बदल गई; हाँलाकि मैं अब भी ध्यान करती व आश्रम के कुछ कार्यक्रमों में भाग लेती, परन्तु अब मैं अपने बच्चों के साथ हर रोज़ कई घण्टे आनन्द से बिताती। उन्हें आश्रम में रहना, बाबा जी के पास बैठना, नामसंकीर्तन के सुमधुर स्वर सुनना और बगीचे में पशुओं को व मूर्तियों को देखना बहुत अच्छा लगता था। मेरे परिवार के हर सदस्य के लिए गुरुदेव सिद्धपीठ में बाबा जी के साथ बिताया हुआ यह समय हमारी सबसे अनमोल यादों में से है।

घर वापस आने के बाद भी हम बाबा जी की उपस्थिति और उनके संरक्षण को अनुभव करते थे। हमारा घर, शक्ति से परिपूर्ण, एक पावन स्थान की तरह लगने लगा। यह एक आदर्श स्थान की तरह महसूस होता था, जहाँ हम साधना कर सकते थे, अभ्यास कर सकते थे और एक-दूसरे को प्रेम दे सकते थे और इस प्रकार भगवान व श्रीगुरु के और भी निकट आ सकते थे। एक परिवार के रूप में हमें गुरुदेव सिद्धपीठ में एक-साथ लाकर, बाबा जी ने हमारे गृहस्थ जीवन को एक पावन जीवन में रूपान्तरित कर दिया था। कैसा अनुपम आशीर्वाद!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।